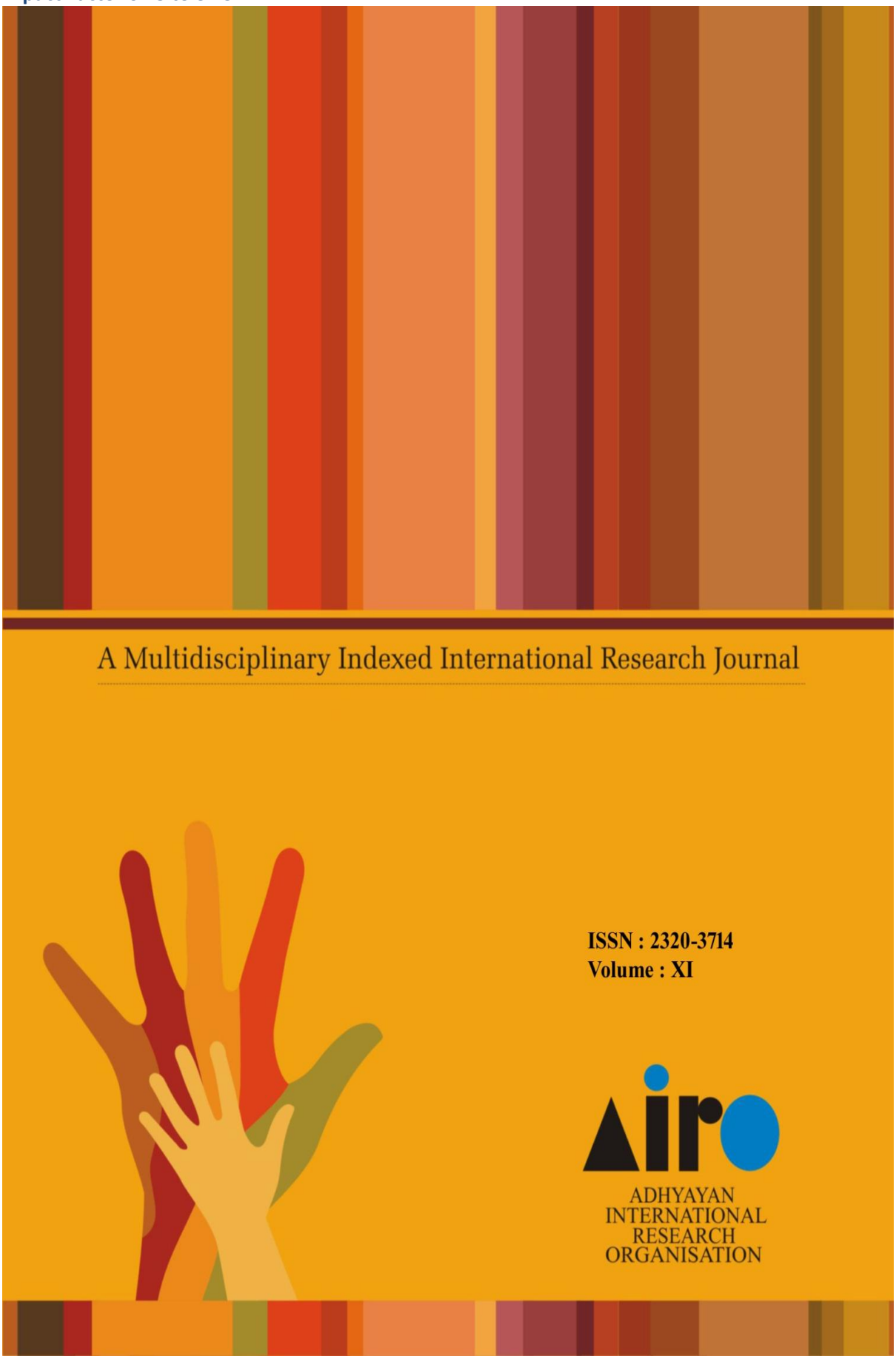
A Multidisciplinary Indexed International Research Journal
ISSN : 2320-3714
Volume : XI
ADHYAYAN
INTERNATIONAL
RESEARCH
ORGANISATION

Airo International Research Journal
Volume XI, ISSN: 2320-3714
Impact Factor 0.75 to 3.19
May, 2017

राम काव्य भक्ति परम्परा का अध्ययन

Dr. Krishna Kumar Thakur

Asst. Professor Hindi Century Cement College Baikunth (C.G.) Dist. Raipur

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

सारांश –

भक्ति परम्परा का विकास प्राचीनकाल में ही हो गया था। राम भक्ति के कवियों ने अपनी मधुर वाणी से जनता के तमाम स्तरों को राममय कर दिया। राम भक्त कवियों ने सभी धर्मों में समन्वय स्थापित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में राम भक्ति भावना और साहित्य पर चर्चा की गई है। यद्यपि रामकाव्य का आधार संस्कृत साहित्य में उपलब्ध राम–काव्य और नाटक रहें हैं।

प्रस्तावना–

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागो में बाटा गया हैद्य आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, व आधुनिककाल व आचार्य शुक्ल ने भक्तिकाल को पुनः दो उपवर्गों में बाटा गया है– रामकाव्य और कृष्णकाव्य। हिंदी साहित्य में भक्ति कल हा समय 1375 ई. से 1700 ई. तक माना जाता हैद्य यह हिंदी साहित्य का श्रेष्ठ युग हैद्य आचार्य श्यामसुन्दर दास ने इसे स्वर्ण कल कहा है। दक्षिण में आलवार बन्धु नाम से रामानुजाचार्य प्रमुख थे। इन्हीं की परम्परा में रामानन्द हुए। आपका व्यक्तित्व असाधारण था। उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊँच–नीच का भेद तोड़ दिया। सभी जातियों के अधिकारी व्यक्तियों को आपने शिष्य बनाया। रामानन्द ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया। उनके राम परब्रह्म स्वरूप हैं। उनमें शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वय है। वे मर्यादा पुरूषोत्तम और लोकरक्षक हैं। राम भक्ति पर प्रकाश डालने से पहले भक्ति क्या है? भक्ति का स्वरूप क्या है? इसे समझलेना चाहिये।

भक्ति से आशय –

मध्यकालीन भक्त आचार्यों ने अपनी सैद्धान्तिक मान्यताओं के अनुकूल विष्णु के किसी अवतार विशेष के प्रति अनन्य निष्ठा प्रकट करते हुए अन्य अवतारों के प्रति अपेक्षित श्रद्धा व्यक्त की हैं चौदहवीं सदी के मध्य से सत्रहवीं सदी के मध्य भक्ति काव्य व्यापक चेतना के साथ एक विराट आंदोलन के रूप में दिखाई पड़ता है। 'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है। भक्ति शब्द का अर्थ है – भजन। प्राचीन काल से ही भारतीय साधना के क्षेत्र में ज्ञान, कर्म और भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 'भक्ति' को

अलग–अलग ढंग से परिभाषित किया गया है।

1. 'श्री मद्भागवत' में 'निष्काम भाव' को ही भक्ति का रूप स्वीकार किया है।

2. 'शाण्डिलय भक्ति सूत्र' में – ईश्वर में परम अनुरक्ति का नाम ही भक्ति है।

3. नारद मुनि के शब्दों में :– ''सा त्वस्मिन् परम् पे्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च।''

इस प्रकार भक्ति भावना ईश्वर के प्रति अनुरक्ति, उसकी स्मृति, निष्काम भाव, श्रद्धा के गुणों से युक्त भावना है जिसमें भक्त अपने आराध्य के आवेगमय प्रेम एवं श्रद्धा भाव रखते हुए उसकी समीपता चाहता है। भक्ति के संबंध में एक पंक्तिः

'भक्ति द्रविड़ उपजी लाए रामानंद'।

भक्ति का स्वरूप–

रामभक्त कवियों के काव्य में सेवक–सेव्य भाव है। वे दास्य भाव से राम की आराधना करते हैं। वे स्वंय को क्षुद्रतिक्षुद्र तथा भगवान को महान बतलाते हैं। राम काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति की पृथक–पृथक महत्ता स्पष्ट करते हुए भक्ति को उत्कृष्ट बताया गया है। यद्यपि वे ज्ञान मार्ग को कठिन तथा भक्ति मार्ग को सहज, सरल स्वीकार करते हैं। रामानंद ने विष्णु के अन्य रूपों में 'रामरूप' को ही लोक के लिए अधिक कल्याणकारी समझ छांट लिया और एक सबल सम्प्रदाय का संगठन किया। इसके साथ–साथ ही उन्होंने उदारतापूर्वक मनुष्य मात्र को इस सुलभ सगुण भक्ति का अधिकारी माना और वर्ण भेद, जातिभेद, देशभेद आदि का विचार भक्ति मार्ग से दूर रखा। इसी प्रकार राम साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया। राम साहित्य का विवरण देने से पहले साहित्य को जान लेना आवश्यक है। साहित्य शब्द को परिभाषित करना कठिन है जैसे पानी की आकृति नहीं होती जिस सांचे में ढालो वह ढल जाता है, उसी तरह का तरल है यह शब्द। कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, जीवनी, रेखाचित्र यात्रा वृतान्त समालोचना बहुत से सांचे हैं। संस्कृत में एक शब्द वांड्मय। भाषा के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया, वह वांड्मय है। साहित्य के संदर्भ में संस्कृत की इस परिभाषा में मर्म है –शब्दार्थौ सहितो काव्यम। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' नाम ग्रन्थ लिखकर साहित्य शब्द को व्यवहार में प्रचलित किया। भाव किसी सृजन को वह गहराई की परिधि में लाता है। कितनी सादगी से निदा फाजली कह जाते हैं–

''मैं रोया परदेस में भीगा मां का प्यार
दुख ने दुख से बात की, बिन चिट्ठी बिन तार''।

शब्द और अर्थ के बीच सादगी की स्पर्धा है किन्तु भाव इतने गहरे कि रोम–रोम से इस सृजन को महसूस किया जा सकता है, यही साहित्य है। 'साहित्य समाज का दर्पण है।' रचनाकार अपने सामाजिक सरोकारों से विमुक्त नहीं हो सकता, यही कारण है कि साहित्य अपने समय का इतिहास बनता चला जाता है। साहित्य शब्द, अर्थ और भावनाओं की वह त्रिवेणी है, जो जनहित की धारा के साथ,

उच्चादर्शों की दिशा में प्रवाहित है। किसी भाषा के वाचिक और लिखित समूह को साहित्य कह सकते हैं। दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है। ''सहितस्य भावः ततसाहित्यम्'' जिसमें सहित का भाव हो, उसे साहित्य कहते हैं। इसके विषय में संस्कृत साहित्यकारों ने जो सम्मतियां दी हैं, वे श्राद्ध विवेककार कहते हैंः

''परस्पर सापेक्षाणा तुल्य रूपाणां युगपदेक क्रिया–न्ययित्वं साहित्यम्'।''

रामकाव्य की विशेषताएँ

केशव पर मुख्यत दोष लगाया जाता है कि उन्होंने रामचंद्रिका में राम कथा को मनमाने ढंग से विवृत और विश्रृंखलित कर दिया है। अनेक धार्मिक प्रसंगों को छोड़ दिया है या संक्षिप्त कर दिया है, लेकिन यह निष्कर्ष सामान्यतः तुलसी की 'रामचरितमानस के साथ रामचंद्रिका की तुलना करने के कारण ही निकाला जाता रहा है। अधिकांश आलोचकों के सामने या तो संपूर्ण रामकथा सहित्य नहीं रहा' अन्यथा ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वयं तुलसी ने भी राम कथा के परंपरागत रूपों से हटकर अपने समय की परिसिथतियों, अपनी विचारधारा और रुचि तथा तत्कालीन भारतीय वातावरण के अनुसार राम–कथा को एक नयी मर्यादा, नया आदर्श, नयी धार्मिक एवं नैतिक आस्था का रूप प्रदान किया है। ठीक इसी प्रकार केशव ने भी अपनी रुचि, लोक–रुचि तथा तत्कालीन परिसिथतियों एवं विचारों के अनुरूप राम कथा का वर्णन किया है। रामचंद्रिका की रचना करते समय केशव के सामने तुलसी और उनकी रामचरितमानस प्रेरणा स्रोत के रूप में नहीं रही, वरन संस्वृत का रामकाव्य साहित्य रहा। विशेष रूप से वह परंपरा जिसमें घटनाओं के ऊहात्मक तथा वक्रोकित प्रधान वर्णन एवं भाषा, छंद, अलंकार आदि की विशिष्टता से चमत्कार उत्पन्न करने की तथा राम को मुख्यतरू एक राजा के रूप में मानकर उनके राज वैभव एवं दाम्पत्य, श्रृंगार का खुलकर वर्णन करने की प्रवृत्ति प्रधान रही हैं। मुख्यतरू केशव के प्ररेणा स्रोत श्वाल्मीकि रामायण, श्आध्यात्म रामायण, हनुमन्नाटक, प्रसन्न राघव आदि संस्कृत ग्रंथ रहे है। रामचंद्रिका की कथा का मूल आधार वाल्मीकि वृत रामायण है। किंतु केशव ने उनका नितान्त अनुकरण न कर अपनी मौलिक सूझ–बूझ और अभिरुचि के अनुसार कॉट–छॉट कर ली है।

काव्य शैलियाँः

रामकाव्य में काव्य की प्रायः सभी शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। तुलसीदास ने अपने युग की प्रायः सभी काव्य–शैलियों को अपनाया है। वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूर की गीतिपद्धति, गंग आदि भाट कवियों की कवित्त–सवैया पद्धति, जायसी की दोहा पद्धति, सभी का सफलतापूर्वक प्रयोग इनकी रचनाओं में मिलता है। रामायण महानाटक (प्राणचंद चौहान) और हनुमाननाटक (हृदयराम) में संवाद पद्धति और केशव की रामचंद्रिका में रीति–पद्धति का अनुसरण है।

रस : रामकाव्य में नव रसों का प्रयोग है। राम का जीवन इतना विस्तृत व विविध है

कि उसमें प्रायः सभी रसों की अभिव्यक्ति सहज ही हो जाती है। तुलसी के मानस एवं केशव की रामचंद्रिका में सभी रस देखे जा सकते हैं। रामभक्ति के रसिक संप्रदाय के काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली है। मुख्य रस यद्यपि शांत रस ही रहा।

भाषाः रामकाव्य में मुख्यतः अवधी भाषा प्रयुक्त हुई है। किंतु ब्रजभाषा भी इस काव्य का श्रृंगार बनी है। इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में अन्य भाषाओं के भी शब्द आ गए हैं। बुंदेली, भोजपुरी, फारसी तथा अरबी शब्दों के प्रयोग यत्र–तत्र मिलते हैं।रामचरितमानस की अवधी प्रेमकाव्य की अवधी भाषा की अपेक्षा अधिक साहित्यिक है।

छंदः रामकाव्य की रचना अधिकतर दोहा–चौपाई में हुई है। दोहा चौपाई प्रबंधात्मक काव्यों के लिए उत्कृष्ट छंद हैं । इसके अतिरिक्त कुण्डलिया, छप्पय, कवित्त, सोरठा, तोमर, त्रिभंगी आदि छंदों का प्रयोग हुआ है ।

अलंकारः रामभक्त कवि विद्वान पंडित हैं। इन्होंने अलंकारों की उपेक्षा नहीं की। तुलसी के काव्य में अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। उत्प्रेक्षा, रूपक और उपमा का प्रयोग मानस में अधिक है ।

रामभक्ति परम्पराः

वैदिक और लौकिक संस्कृत में रामकथा–

वाल्मीकि रामायण, महाभारत और भागवत पुराण मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। धर्म कथाओं में रामकथा का अपना विशेष महत्व है। रामकथा का सर्वप्रथम बृहत् काव्यगुण सम्पन्न, सुगठित और क्रमबद्ध रूप वाल्मीकि रामायण में मिलता है। वाल्मीकि राम कथा के प्रवर्तक थे। वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ दाक्षिणात्य, गौड़ीय और पश्चिमोत्तरीय उपलब्ध हैं रामकथा की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण ही प्राचीनतम् ग्रन्थ माना जाता है। जिस काव्य की रचना करने में महर्षि च्यवन असमर्थ रहे, वाल्मीकि ने उसे काव्य के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें राम को एक मानव के रूप में अंकित किया गया है। वैदिक साहित्य में रामकाव्य का समग्र रूप क्रमशः चाहे न मिले पर उसके समस्त चारित्रिक बीज सूत्र अवश्य प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में राम, दशरथ, सीता, जनक, इक्ष्वाकु आदि नाम मिलते हैं। इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि साहित्य में भी राम, दशरथ, सीता का उल्लेख हुआ है।

महाभारत और पुराणों में राम कथा

महाभारत में द्रोण पर्व, शान्ति पर्व और आरण्यक पर्व में चार स्थलों पर राम कथा का वर्णन मिलता है। हरिवंश, वायु, विष्णु, भागवत, कूर्म, अग्नि, नारद, गरूड़, स्कन्द, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्माण्ड आदि पुराणों में राम कथा का उल्लेख पाया जाता है।

संहिताओं में रामकाव्य

प्राचीन वैष्णव संहिताओं और उपनिषदों में भी रामचरित का उल्लेख मिलता है। अगस्त्य संहिता, कलि राघव और राघवीय संहिता में राम के प्रति दास्य भाव की भक्ति का वर्णन किया गया है। अन्य अनेक संहिता ग्रंथों में राम के मधुर रूप की उपासना का वर्णन हुआ है।

बौद्ध और जैन कवियों द्वारा रामकाव्य

चार सौ ई. पूर्व के लगभग रामकथा अत्यधिक लोकप्रिय हो चुकी थी। बौद्ध धर्म में बोधिसत्व को राम का अवतार माना गया हैं जातक साहित्य में राम कथा आज भी सुरक्षित है। जैन साहित्य में राम कथा का विपुल प्रयोग हुआ है। जैन राम कथा की दो परम्पराएं हैं – विमलसूरि के 'पउमचरिय' की कथा वाल्मीकि रामायण की कथा के बहुत निकट है। जैन कवियों ने राम के अनेक विवाहों का वर्णन किया है।

संस्कृत नाटकों में रामकथा

रामकथा को आधार बनाकर संस्कृत में काफी संख्या में नाटक लिखे गए हैं। भास द्वारा रचित 'प्रतिमा' और 'अभिषेक नाटक' भवभूति रचित 'महावीर चरितम्' और 'उत्तर रामचरितम' मुरारी रचित 'अनंगराघव' रामेश्वर की 'बालरामायण' तथा 'हनुमन्नाटक' आश्चर्य चूड़ामणि रचित 'प्रसन्नराघव' आदि नाटकों में रामकथा को कथानक बनाया गया है। रामरचित विषयक काव्य ग्रन्थों में निम्न तो अत्यन्त प्रसिद्ध है। रघुवंश नामक महाकाव्य में नवम् सर्ग से षोड्श सर्ग तक रामकथा का वर्णन किया है। कुमार दास रचित 'जानकीहरण' क्षेमेन्द्र रचित 'रामायण मंजरी' और 'दशावतार चरित' महाकाव्यों में राम कथा का ही वर्णन किया गया है।

हिन्दी साहित्य में राम कथा

हिन्दी में राम काव्य का विवेचन तुलसीदास को ही मध्य में रखकर किया जा सकता है। तुलसी पूर्व हिन्दी में राम कथा का साहित्य अधिक विस्तृत नहीं हे। अतः तुलसीदास के रामचरितमानस की तुलना किसी अन्य से करना निरर्थक होगा। हिन्दी में सबसे पहले चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' नामक महाकाव्य के द्वितीय समय में रामकथा का वर्णन है। इस समय में दशावतारों का वर्णन किया गया है। कवि ने जहाँ एक ओर रामावतार का वर्णन वाल्मीकि रामायण के अनुसार किया है, वहीं दूसरी ओर युद्ध कांड की कथा बड़े विस्तार से की है। राम काव्य परम्परा की प्रथम रचना गोस्वामी विष्णुदास रचित भाषा वाल्मीकि रामायण उपलब्ध होती है लेकिन कवि ने संपूर्ण में विभक्त किया है। इन्होंने प्रत्येक कांड को सर्गों में विभक्त किया है। ईश्वर दिल्ली

के बादशाह सिकंदर शाह के समकालीन थे। रामकथा से संबंधित उनकी रचनाएं 'भरत–विलाप' अंगदपैज और राम जन्म भी सत्यवती कथा के आसपास रची गई। भरत विलाप में राम वनवास के पश्चात् भरत के ननिहाल से लौटनेख् दश्रथ की अन्त्येष्टि, राम को लौटाने के लिए भरत की चित्रकूट यात्रा तथा चरणापादुका से लेकर अयोध्या आने तक की कथा का वर्णन किया है। सूरदास ने सूरसागर में रामकथा से संबंधित कूछ पदों की रचना की सूरसागर के नवें स्कन्ध में राम जन्म से लकर राज्याभिषेक तक की कथा का वर्णन और आत्म–निवेदन किया गया है। हनुमान जी का सीता को लाने व रावण को पकड़ लाने या लंका को उठा लाने की बात राम से कहना, रावण मदोदरी संवाद, अंगद के दूतत्व की उद्धावना की है। सूर के रामचरित–वर्णन का आधार उनकी राम–कृष्ण की अभेदोपासना हैं यशोदा कृष्ण को राम की कहानी सुनाती हैः दशरथ के पुत्र राम थे। उनकी रानी सीता थी। अपने पिता के वचन मानकर वे पंचवटी वन में रहने लगे। वहां रहते हुए अभिमानी रावण ने सीता का हरण किया। यह सुनते ही 'लक्ष्मण धनुष दो' कहकर कृष्ण उठ बैठे। यशोदा भयभीत हो गई। अभेदो पासना का यह उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी तरह मेहो जी कृत रामायण का रचना समय संवत् 1575 तक हिन्दी मरू गुर्जर और राजस्थानी में तीन प्रकार की राम काव्य परम्पराएं प्रचलित थीः

1. वैष्णव रामकाव्य परम्परा (विष्णुदास, ईश्वरदास, सूरदास की रचनाएं)

2. जैन राम काव्य परम्परा (ब्रह्मजिनदास तथा अन्य कवि)

3. वैष्णव लोकधर्मी रामकाव्य परम्परा (कर्मण कृत सीताहरण)

मेहो जी कृत रामायण के कथा सार के अनुसार असुर संहारने, बंदी देवताओं को छुड़ाने और अपने वचन को सत्य सिद्ध करने हेतु परमेश्वर ने राम लक्ष्मण के रूप में अवतार लिया। वे तथा भरत–शत्रुघ्न चारों अयोध्या के राजा दशरथ के घर जन्मे।

'अठसठ तीरथ जो पुन न्हाया, सुणौ
रामायण काने,

पढ़िया नै मेहो समझावै, धायो धरम
धियाने।'

यदिसीता का हरण नहीं होता तो उनका 'सत्' लक्ष्मण का 'जत' और हनुमान का बल पराक्रम में सब गुण प्रकट नहीं होते। (कूप–छांह की भांति भीतर ही समाप्त हो जाते)

तुलसीदासरामकाव्य के एकछत्र सम्राट है। रामकाव्य परम्परा का यह देदीप्यमान रत्न है।तुलसीदास ने कवितावली में कहा है कि :

'माता पिता जग जाइ तज्यो विधिहू न
लिख्यो कछु भले भलाई।'

गोस्वामी जी का जब जन्म हुआ वे तब पांच वर्ष के बालक के समान थे और उन्हें पूरे दांत भी थे वे रोये नहीं, केवल 'राम' शब्द उनके मुंह से सुनाई पड़ा। तुलसीदास की कीर्ति का आधार स्तम्भ

उनका महान ग्रन्थ रामचरितमानस है। इसमें कवि ने मानस रूपी सरोवर के रूपक द्वारा रामकथा को प्रस्तुत किया है। तुलसी की लोकप्रियता का कारण यह है कि उन्होंने अपने काव्य में भोगे गये जीवन का गम्भीर तथा व्यापक चित्रण किया है। तुलसी ने राम के संघर्ष की कथा को अपने समाज तथा अपने जीवन संघर्ष की कथा के अनुसार देखा। उन्होंने न तो वाल्मीकि के राम का वर्णन किया तथा न ही भवभूति के राम का बल्कि उन्होंने अपने युग के राम का भावपूर्ण वर्णन किया। रामकाव्य की परम्परा में संस्कृत में जो स्थान वाल्मीकि का है, वहीं हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास का है।

'गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग'।

इसी प्रकार अग्रदास तुलसीदास के समकालीन थे। वे दिन रात अपने आराध्य श्री राम के ध्यान में लीन रहते थे। इन्होंने रामध्यानमंजरी और हितोपदेश उपखाणा बावनी राम कथा से संबंधित लिखी। यह अग्रअली नाम से स्वंय को जानकी की सखी मानकर काव्य रचना करते थे। इन्होंने राम के ऐश्वर्य रूप और उनकी लीलाओं का सुंदर वर्णन किया हैं प्राणचंद चौहान ने संवत् 1667 में 'रामायण महानाटक' लिखा और हृदयरमा के हनुमन्न नाटक की चर्चा की जा सकती है।

'जानकी को मुख बिलोक्यों ताते कुंडल,

न जानते हौ, वीर पायं छुवै रघुराई के।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य आधुनिक युग के रामकाव्यों में रामचरित उपाध्याय की 'रामचरित चितामणि' रामनाथ ज्योतिषी का 'श्री राम चन्द्रोदय', मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध का 'वैदेही वनवास', बालकृष्ण शर्मा नवीन का 'उर्मिला' आदि कुछ काव्य रचनाएं हैं जिनमें आधुनिक युग के अनुसार नवीन विचारों का समावेश किया है। निराला द्वारा रचित 'शबरी' नरेश मेहता कृत 'संशय की एक रात' राम कथा पर आधारित रचनाएं हैं।

निष्कर्ष

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में रामकथा के माध्यम से जो आदर्श स्थापित किया है उसके पीछे लोक कल्याण की भावना विद्यमान है। अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को अनेक प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया है। यदि सच्चे अर्थों में कोई व्यक्ति भारतीय संस्कृति से परिचित होना चाहता है तो उसे तुसलीदास द्वारा रचित रामकाव्य से बढ़कर दूसरा साधन न मिलेगा।

''जब–जब होइ धरम की हानि

बढ़हि असुर अधम अभिमानी

तब–तब धरि प्रभु मनुज सरीरा

हरहिं सकल सज्जन भवपीरा।''

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. रामचन्द्र शुक्ल

2. मेहो जी कृत रामायण – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

3. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य।

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास।

5. www.sahityashilpi.com/2008/09/blogspo3518htm

6. https://hi.wikipedia.org/wiki

7. Gadyakosh.org/gk